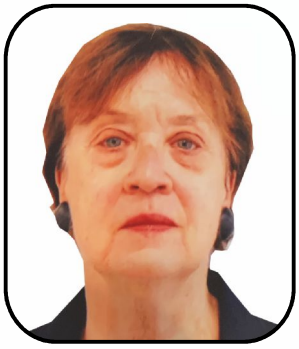

SMT. SHALINI DEVI HOLKAR

Smt. Shalini Devi Holkar is a leading advocate for India's handloom industry and a champion of artisan empowerment. Her efforts in promoting Maheshwari textiles and supporting weavers, particularly women, have had a lasting impact on India's textile heritage.

2. Born on 11th August, 1945 in the United States, she pursued her education at Stanford University, USA, where she developed a deep appreciation for art, history, and culture. After her marriage into the Holkar royal family of Indore, she was introduced to the centuries-old Maheshwari weaving tradition. Recognizing the need for its revival and the empowerment of the weaving community, she dedicated herself to revitalizing the craft.

3. Smt. Holkar co-founded REHWA Society in Maheshwar, Madhya Pradesh in 1978 with the vision of rejuvenating the Maheshwari weaving industry while providing sustainable livelihoods for artisans. Under her leadership, REHWA has trained hundreds of weavers, introduced new designs while maintaining traditional techniques, and expanded markets for Maheshwari textiles both in India and internationally. She played a crucial role in ensuring financial independence for women weavers, pioneering social initiatives such as weaver housing, education, and healthcare programs. She also established the Devi Ahilyabai Bal Jyoti School to provide low-cost, high-quality education to the children of Maheshwar's weaving community and built a housing colony for Maheshwar's handloom weavers.

4. Smt. Holkar also founded Women Weave Charitable Trust in 2003 to create employment opportunities in handloom for women from non-weaving backgrounds. Women Weave specializes in weaving hand-spun Khadi textiles in contemporary designs for the export market. She actively promotes natural dyeing techniques, ethical textile production, and direct artisan-consumer linkages, shaping discussions on sustainable fashion and cultural preservation. Women Weave also focuses on innovation and sustainability in rural weaving communities, ensuring that traditional skills continue to thrive in a modem context.

5. Smt. Holkar founded the Handloom School under the aegis of Women Weave In 2015, an initiative aimed at equipping young weavers with essential business and design skills to help them become handloom entrepreneurs. The school provides training in entrepreneurship, design innovation, and market access, ensuring that the next generation of weavers can sustain and grow their craft in the 21st century.

6. Smt. Holkar's relentless efforts in reviving the Maheshwari handloom tradition have positioned Maheshwar as a key center for handloom textiles, ensuring that the age-old weaving tradition continues to thrive in modern times. Through her leadership and dedication, she has redefined the role of handloom as both a cultural treasure and a means of economic upliftment.

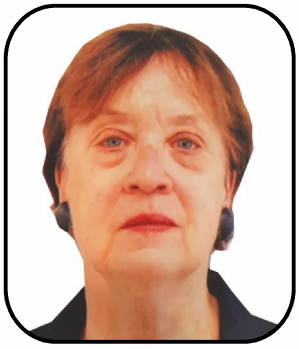

श्रीमती शालिनी देवी होलकर

श्रीमती शालिनी देवी होलकर भारत के हथकरघा उद्योग की अग्रणी पक्षधर और कारीगरों के सशक्तिकरण की हिमायती हैं। माहेश्वरी टेक्सटाइल को बढ़ावा देने और बुनकरों, खास तौर पर महिलाओं को सहायता प्रदान करने के उनके प्रयासों का भारत की कपड़ा विरासत पर स्थायी प्रभाव पड़ा है।

2. उनका जन्म 11 अगस्त, 1945 को संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ, उन्होंने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए से शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उन्होंने कला, इतिहास और संस्कृति के प्रति गहरी आकांक्षा विकसित की। इंदौर के होल्कर राजघराने में विवाह के बाद, उनका परिचय सदियों पुरानी माहेश्वरी बुनाई परंपरा से हुआ। इसके पुनरुद्धार और बुनकर समुदाय के सशक्तिकरण की आवश्यकता को समझते हुए, उन्होंने स्वयं को शिल्प कला के पुनरुद्धार के लिए समर्पित कर दिया।

3. श्रीमती होलकर ने वर्ष 1978 में मध्य प्रदेश के महेश्वर में रेहवा सोसाइटी की सह–स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य कारीगरों के लिए स्थायी आजीविका प्रदान करते हुए माहेश्वरी बुनाई उद्योग को पुनर्जीवित करना था। उनके नेतृत्व में, रेहवा ने सैकड़ों बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, पारंपरिक तकनीकों को बनाए रखते हुए नए डिज़ाइन पेश किए हैं और भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माहेश्वरी टेक्सटाइल के लिए बाज़ार तलाशा है। उन्होंने महिला बुनकरों के लिए वित्तीय स्वतंत्रता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बुनकर आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रमों जैसी सामाजिक पहलों का नेतृत्व किया। उन्होंने महेश्वर के बुनकर समुदाय के बच्चों को कम लागत वाली, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए देवी अहिल्याबाई बाल ज्योति स्कूल की स्थापना की और महेश्वर के हथकरघा बुनकरों के लिए एक आवासीय कॉलोनी बनाई।

4. श्रीमती होलकर ने वर्ष 2003 में गैर–बुनाई पृष्ठभूमि वाली महिलाओं के लिए हथकरघा में रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए वूमन वीव चैरिटेबल ट्रस्ट की भी स्थापना की। वूमन वीव निर्यात बाजार के लिए समकालीन डिजाइनों में हाथ से काते गए खादी वस्त्रों की बुनाई में माहिर है। वह टिकाऊ फैशन और सांस्कृतिक संरक्षण पर विचार करते हुए प्राकृतिक रंगाई तकनीकों, एथिकल कपड़ा उत्पादन और प्रत्यक्ष कारीगर–उपभोक्ता संबंधों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देती है। वूमन वीव ग्रामीण बुनाई समुदायों में नवाचार और वहनीयता पर भी ध्यान केंद्रित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि पारंपरिक कौशल आधुनिक संदर्भ में भी फलता–फूलता रहे।

5. श्रीमती होलकर ने वर्ष 2015 में वूमन वीव के तत्वावधान में हैंडलूम स्कूल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य युवा बुनकरों को आवश्यक व्यवसाय और डिजाइन कौशल में प्रशिक्षित करना था ताकि उन्हें हैंडलूम उद्यमी बनने में मदद मिल सके। यह स्कूल उद्यमिता, डिजाइन नवाचार और बाजार तक पहुंच में प्रशिक्षण प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि बुनकरों की अगली पीढ़ी 21वीं सदी में अपने शिल्प कला को बनाए रख सके और विकसित कर सके।

6. माहेश्वरी हथकरघा परंपरा को पुनर्जीवित करने में श्रीमती होल्कर के अथक प्रयासों ने यह सुनिश्चित करते हुए कि सदियों पुरानी बुनाई परंपरा आधुनिक समय में भी फलती–फूलती रहे, महेश्वर को हथकरघा वस्त्रों के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित किया है। अपने नेतृत्व और समर्पण के माध्यम से, उन्होंने हथकरघा की भूमिका को एक सांस्कृतिक खजाने और आर्थिक उत्थान के साधन दोनों के रूप में फिर से परिभाषित किया है।